श्री ललिता चालीसा

॥ चौपाई ॥

जयति जयति जय ललिते माता । तव गुण महिमा है विख्याता ॥
तू सुन्दरी, त्रिपुरेश्वरी देवी । सुर नर मुनि तेरे पद सेवी ॥
तू कल्याणी कष्ट निवारिणी । तू सुख दायिनी, विपदा हारिणी ॥
मोह विनाशिनी दैत्य नाशिनी । भक्त भाविनी ज्योति प्रकाशिनी ॥
आदि शक्ति श्री विद्या रूपा । चक्र स्वामिनी देह अनूपा ॥
हृदय निवासिनी-भक्त तारिणी । नाना कष्ट विपति दल हारिणी ॥
दश विद्या है रुप तुम्हारा । श्री चन्द्रेश्वरी नैमिष प्यारा ॥
धूमा, बगला, भैरवी, तारा । भुवनेश्वरी, कमला, विस्तारा ॥
षोडशी, छिन्न्मस्ता, मातंगी । ललितेशक्ति तुम्हारी संगी ॥
ललिते तुम हो ज्योतित भाला । भक्त जनों का काम संभाला ॥
भारी संकट जब-जब आये । उनसे तुमने भक्त बचाए ॥
जिसने कृपा तुम्हारी पायी । उसकी सब विधि से बन आयी ॥
संकट दूर करो माँ भारी । भक्त जनों को आस तुम्हारी ॥
त्रिपुरेश्वरी, शैलजा, भवानी । जय जय जय शिव की महारानी ॥
योग सिद्दि पावें सब योगी । भोगें भोग महा सुख भोगी ॥
कृपा तुम्हारी पाके माता । जीवन सुखमय है बन जाता ॥
दुखियों को तुमने अपनाया । महा मूघ जो शरण न आया ॥
तुमने जिसकी ओर निहारा । मिली उसे सम्पत्ति, सुख सारा ॥
आदि शक्ति जय त्रिपुर प्यारी । महाशक्ति जय जय, भय हारी ॥
कुल योगिनी, कुण्डलिनी रूपा । लीला ललिते करें अनूपा ॥
महा-महेश्वरी, महा शक्ति दे । त्रिपुर-सुन्दरी सदा भक्ति दे ॥
महा महा-नन्दे कल्याणी । मूकों को देती हो वाणी ॥
इच्छा-ज्ञान-क्रिया का भागी । होता तब सेवा अनुरागी ॥
जो ललिते तेरा गुण गावे । उसे न कोई कष्ट सतावे ॥
सर्व मंगले ज्वाला-मालिनी । तुम हो सर्व शक्ति संचालिनी ॥
आया माँ जो शरण तुम्हारी । विपदा हरी उसी की सारी ॥
नामा कर्षणी, चिन्ता कर्षणी । सर्व मोहिनी सब सुख-वर्षणी ॥
महिमा तव सब जग विख्याता । तुम हो दयामयी जग माता ॥
सब सौभाग्य दायिनी ललिता । तुम हो सुखदा करुणा कलिता ॥
आनन्द, सुख, सम्पत्ति देती हो । कष्ट भयानक हर लेती हो ॥
मन से जो जन तुमको ध्यावे । वह तुरन्त मन वांछित पावे ॥
लक्ष्मी, दुर्गा तुम हो काली । तुम्हीं शारदा चक्र-कपाली ॥
मूलाधार, निवासिनी जय जय । सहस्त्रार गामिनी माँ जय जय ॥
छः चक्रों को भेदने वाली । करती हो सबकी रखवाली ॥

योगी, भोगी, क्रोधी, कामी । सब हैं सेवक सब अनुगामी ।।
सबको पार लगाती हो माँ । सब पर दया दिखाती हो माँ ।।
हेमावती, उमा, ब्रह्माणी । भण्डासुर कि हृदय विदारिणी ।।
सर्व विपति हर, सर्वाधारे । तुमने कुटिल कुपंथी तारे ।।
चन्द्र-धारिणी, नैमिश्वासिनी । कृपा करो ललिते अधनाशिनी ।।
भक्त जनों को दरस दिखाओ । संशय भय सब शीघ्र मिटाओ ।।
जो कोई पढ़े ललिता चालीसा । होवे सुख आनन्द अधीसा ।।
जिस पर कोई संकट आवे । पाठ करे संकट मिट जावे ।।
ध्यान लगा पढ़े इक्कीस बारा । पूर्ण मनोरथ होवे सारा ।।
पुत्र-हीन संतति सुख पावे । निर्धन धनी बने गुण गावे ।।
इस विधि पाठ करे जो कोई । दु:ख बन्धन छूटे सुख होई ।।
जितेन्द्र चन्द्र भारतीय बतावें । पढ़े चालीसा तो सुख पावें ।।
सबसे लघु उपाय यह जानो । सिद्ध होय मन में जो ठानो ।।
ललिता करे हृदय में बासा । सिद्धि देत ललिता चालीसा ।।

।। दोहा ।।

ललिते माँ अब कृपा करो, सिद्ध करो सब काम ।
श्रद्धा से सिर नाय करे, करते तुम्हें प्रणाम ।।